GA-(H)
पार्ट - टू
मैथिली प्रतिष्ठा
पेपर - तेसर

प्रो० संजीव कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (lnmu)

प्रो० हरिमोहन झाक 'आत्मकथा' :-

प्रो० हरिमोहन झाक आत्मकथा 'जीवन यात्रा' नामसँ हिनक मृत्युपरान्त (1984) ई० मे प्रकाशित भेल (1985) ई० मे साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत सेहो प्रथल गेल अछि। प्रो० झा एहि मे अपन जीवनक विविध घटना ओ अनुभवक रोचक वर्णन कएने छथि।

मैथिलीकेर महान साहित्यकारक ई पहिल पुस्तकाकार आत्मकथा थीक एकर प्रकाशन सँ मैथिल साहित्य कें एकटा विशिष्ट ग्रन्थ उपलब्ध भेल। एहि पोथीक विशिष्टताक सम्बन्ध मे डॉ० भीमनाथ लिखने छथि - "जीवन यात्रा मे प्रोफेसर हरिमोहन झाक अपन जीवनक घटनावली तँ विस्तार सँ वर्णित अछिए, अछि तकर अतिरिक्त तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक ओ अन्य स्थिति कारणो महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि।"

फरवरी 1998 ई० मे जीवनयात्रा 'क किछु अप्रकाशित अंश 'आरम्भ' नामक पत्रिका मे छपल अछि, जे कतिपय कारणे पुस्तक मे नहि छपि सकल छल।

जीवनयात्रा मे प्रो० झाक हास्य-व्यंग्य सँ इतर भाव केँ शिल्पक दर्शन सेहो होइत अछि। लेखकक आनन्दमय जीवनाबाधिक वर्णनक क्रम मे हास्य-व्यंग्यक छवि छटा विश्लेषित होइतहि अछि, परंच कथ्यकालक घटनाक प्रसंग आबिते पाठक करुणामय संवेदना मे डूबि जाइत अछि। एहि पोथी सँ प्रो० झाक पारिवारिक जीवन संग संग तत्कालीन सामाजिक सांस्कृतिक आ साहित्यिक गतिविधिक परिचय सेहो भेटैत अछि।

उपर्युक्त विधाक साहित्यक अतिरिक्त प्रो० झाक कतिपय निबन्ध सेहो प्रकाशित छनि। प्रथम अखिल भारतीय मैथिल लेखक सम्मेलन 1956 ई० मे कथा विभाग क अध्यक्ष रूप मे प्रस्तुत हुनक अभिभाषण सेहो ऐतिहासिक वस्तु अछि।

अन्तु प्रो० हरिमोहन झाक साहित्यिक अवदान क प्रसंग मे निर्विवाद रूप सँ कहल जा सकैछ जे प्रो० झाक साहित्य सँ मैथिली अन्यान्य भाषाभाषीक मध्य सुप्रतिष्ठित भेलाह।

Jamsid Kumar
06/08/20

Scanned by TapScanner